खेती री बातां

गोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

gramrajasthan.in

वर्ष-19 अंक-10 मासिक पत्रिका आर.एन.आई. - 70296/98 5 अक्टूबर 2016 वार्षिक शुल्क- 12 रुपये

''ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2016'' (ग्राम) के बारे में समीक्षा

कृषि एवं उद्यान विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती नीलकमल दरबारी ने नवम्बर माह में जयपुर में आयोजित होने वाले ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने इस कार्यक्रम के संबंध में ग्राम के उप समन्वयकों और सह समन्वयकों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। श्रीमती दरबारी ने बताया कि किसानों को प्रदेश के सभी हिस्सों से लाने के लिए स्पेशल ट्रेन चलाई जायेगी, उन्होंने निर्देश दिए कि किसानों के रुकने और खाने की अच्छी व्यवस्था की जायेगी। श्रीमती दरबारी ने कार्यक्रम से जुड़े सभी अधिकारियों को समयबद्ध कार्य करने के निर्देश दिए।

ग्राम एक अंतर्राष्ट्रीय एग्री इवेंट है जो जयपुर के सीतापुरा में स्थित जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर (जेईसीसी) में 9 से 11 नवम्बर तक आयोजित किया जायेगा। इसका आयोजन राजस्थान सरकार एवं फैडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा संयुक्त रुप से किया जा रहा है। इस इवेंट में लगभग 50,000 किसानों के भाग लेने की संभावना है। ग्राम के आयोजन का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में त्वरित सतत् विकास के माध्यम से किसानों का आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करना तथा वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुनी करना है। इसके अतिरिक्त इस वैश्विक आयोजन में राजस्थान के कृषि जलवायु के अनुरुप विश्वभर की सर्वोत्तम तकनीक और प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया जायेगा। यह मीट निवेशकों, मैन्यूफैक्चर्स के साथ–साथ शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं के लिए भी महत्वपूर्ण मंच साबित होगा।

अधिक जानकारी के लिए ग्राम वेबसाइट www.gramrajasthan.in पर विजिट करें।

खरीफ में खराबे के आंकलन के लिए समिति गठित

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत खरीफ 2016 की बीमित फसलों के खराबे के आंकलन के लिए कृषि विभाग ने एक समिति का गठन किया है।

यह समिति स्थानीय आपदाओं से खराब हुई अधिसूचित फसलों के खराबे का आंकलन करेगी। इसके साथ ही यह समिति फसल कटाई के 14 दिन बाद चक्रवात, चक्रवाती वर्षा या बे–मौसम बारिश से हुई क्षति का भी आंकलन करेगी।

कृषि मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी ने बताया कि इस समिति में ब्लॉक स्तरीय सहायक कृषि अधिकारी, क्षेत्रीय गिरदावर, बीमा कम्पनी द्वारा मनोनीत क्षति मूल्याकंन कर्ता और सम्बंधित कृषक होगा।

अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में होगी मूंग की खरीद

राज्य के कृषकों को मूंग फसल का उचित मूल्य दिलाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा मूल्य स्थिरीकरण कोष योजनान्तर्गत समर्थन मूल्य पर मूंग की खरीद के कार्य हेतु नेफेड को केन्द्रीय नोडल एजेन्सी नियुक्त किया गया है तथा राजफैड को ऐजेन्ट नियुक्त कर राज्य की क्रय–विक्रय सहकारी समितियों के माध्यम से खरीद कार्य कराया जाना है। माह अक्टूबर 2016 से मूंग की समर्थन मूल्य पर खरीद का कार्य प्रारम्भ हो रहा है। मूंग की खरीद अजमेर के केकड़ी, किशनगढ़ व विजयनगर, नागौर के नागौर, मेड़तासिटी, कुचामनसिटी व डीडवाना, भीलवाड़ा के भीलवाड़ा एवं गुलाबपुरा, टोंक के मालपुरा, टोडारायसिंह एवं निवाई, जयपुर के सांभर व चौंमू , सीकर के सीकर, श्रीमाधोपुर व नीमकाथाना, झुंझुनूं के झुंझुनूं व सूरजगढ़, दौसा, चित्तौड़गढ़, जोधपुर के जोधपुर, फलौदी व बिलाड़ा, बाड़मेर के बालोतरा, पाली के सुमेरपुर, पाली व सोजत रोड़, बीकानेर के नोखा, जालोर के जालोर व भीनवाल तथा चूरु के चूरु, तारानगर, सुजानगढ़, राजगढ़, व सादुलपुर केन्द्रों पर होगी। समस्याओं के समाधान हेतु नियंत्रण प्रकोष्ठ के दूरभाष न. 0141–2740108 एवं प्रभारी अधिकारी के मोबाईल न. 9413444054 है।

कृषकों के लिये रबी 2016-17 हेतु प्रमाणित/ सत्यचिहिन्त बीजों की विक्रय दरें घोषित

राजस्थान राज्य बीज निगम ने रबी 2016–17 में सामान्य वितरण के लिए प्रमाणित/ सत्यचिहिन्त बीजों की विक्रय दरें घोषित की हैं:–

फसल	किस्म	विक्रय राशि (रु./किलो)
सरसों	आरजीएन– 298 सत्यचिहिन्त	75
	15 वर्ष तक की अवधि की अधिसूचित समस्त किस्में	60
	15 वर्ष से अधिक अवधि की अधिसूचित समस्त किस्में	65
चना	15 वर्ष तक की अवधि की अधिसूचित समस्त किस्में	100
गेहूँ	10 वर्ष से कम अवधि की अधिसूचित समस्त किस्में	23
	लोक– 1/राज–3077/1482/एच.डी.– 2851	30
	10 वर्ष से अधिक अवधि की अधिसूचित अन्य समस्त किस्में	28
जौ	10 वर्ष से कम अवधि की अधिसूचित समस्त किस्में	17
	10 वर्ष से अधिक अवधि की अधिसूचित समस्त किस्में	26
जीरा	जीसी– 4	270
धनिया	एसीआर– 1 (सत्यचिहिन्त)	150
मैथी	आरएमटी– 305	75
तारामीरा	आरटीएम– 2002 (केरीओवर)	70

खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं बोनस घोषित

प्रमुख खरीफ फसलों का वर्ष 2016–17 के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं बोनस निम्नानुसार है:–

फसल	किस्म	वर्ष 2016–17		
		न्यूनमत समर्थन मूल्य (रु. प्रति क्विंटल)	बोनस (रु. प्रति क्विंटल)	योग (एम.एस. पी+बोनस (रु. प्रति क्विंटल)
धान	सामान्य	1470	–	1470
	ग्रेड–ए	1510	–	1510
ज्वार	हाईब्रिड	1625	–	1625
बाजरा	–	1330	–	1330
मक्का	–	1365	–	1365
रागी	–	1725	–	1725
अरहर (तुर)	–	4625	425	5050
मूंग	–	4800	425	5225
उड़द	–	4575	425	5000
मूंगफली (छिलका सहित)	–	4120	100	4220
सोयाबीन	–	2675	100	2775
सूरजमुखी बीज	–	3850	100	3950
रामतिल	–	3725	100	3825
तिल	–	4800	200	5000
कपास	मध्यम रेशा	3860	–	3860
	लम्बा रेशा	4160	–	4160

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

- सितम्बर माह के कृषि कार्य
- परख
- जौ : विपरीत परिस्थितियों में..
- कृषि विभागीय समन्वय समिति... . पृष्ठ 2

खेती की उन्नत तकनीक अपनाएं : भरपूर फसल व मुनाफा पाएं पृष्ठ 3

- किसान स्वयं बनायें नीम से कीटनाशक
- बहुउपयोगी अलसी की खेती पृष्ठ 4

दूरभाष — 0141–5116240, 2227365/354

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★**जौ** के लिए उन्नत किस्म का 100 से 125 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक बुवाई करें।

★**सरसों** की बुवाई बारानी क्षेत्रों में 15

अक्टूबर तक कर देनी चाहिये। सिंचित क्षेत्रों में बुवाई अधिक से अधिक अक्टूबर के अन्त तक कर देनी चाहिये। सरसों में प्रति हैक्टर असिंचित क्षेत्र में 4 से 5 किलो व सिंचित क्षेत्र में 2.5 किलो उपचारित बीज की दर से बुवाई करें। देर से बुवाई करने पर उपज में भारी कमी हो जाती है, चेपा कीट तथा सफेद रोली रोग का प्रकोप भी अधिक होता है।

★**सरसों** की फसल को सफेद रोली रोग से बचाव के लिए मेन्कोजेब + मैटालेक्सिल (35 एस.डी.) दवा 6 ग्राम प्रति किलो बीज से बीजोपचार करें। पेन्टेड बग कीट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोरपिड (70 डब्ल्यू.एस.) 5 ग्राम दवा से प्रति किलो बीज को उपचारित करें।

★**तिलहन व दलहनी** फसलों में बुवाई पूर्व 250 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर डालें।

★असिंचित क्षेत्रों में **चने** को मध्य अक्टूबर तक व सिंचित क्षेत्र में अक्टूबर अन्त तक प्रति हैक्टर 80 किलो बीज 30 सेंटीमीटर की दूरी पर कतारों में बोयें।

★**रबी मक्का** की डी.एच.एम.– 117, एच. क्यू.पी.एम.–1, संकर गंगा सफेद–2, संकुल माही धवल, बायो–9681 एवं बायो–9637 किस्मों का 20–25 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से 15–20 अक्टूबर तक बुवाई करें।

बागवानी

★**आम** के पौधों में इस माह में मिलीबग कीट का आक्रमण होने की संभावना रहती है। अतः शिशु कीटों को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए एल्काथिन (400 गेज) की 30 सेमी चौड़ी पट्टी जमीन से 2 फुट ऊँचाई पर तने के चारों तरफ बांधें एवं ग्रीस का लेप करें। यदि पेड़ों पर मिलीबग चढ़ गये हैं तो डाइमिथोएट 30 ई.सी. 1.5 मिली या ट्राईजोफोस 40 ई.सी. 2 मिली दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★**बेर** में इस माह यूरिया 600 ग्राम प्रति पौधे के हिसाब से डालकर सिंचाई करें।

सब्जियाँ

★**टमाटर** की सर्दी की फसल हेतु तैयार पौध का खेत में 75 x 75 सेमी. की दूरी पर रोपण करें। रोपण पूर्व खेत की तैयारी के साथ सड़ी गोबर की खाद 150 क्विंटल, नत्रजन 60 किलो, फॉस्फोरस 80 किलो व पोटाश 60 किलो प्रति हैक्टर की दर से मिलायें। इस माह 6–7 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें।

★**रबी प्याज** की फसल के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। एक हैक्टर हेतु 10 किलो बीज पर्याप्त होता है। लाल प्याज की उन्नत किस्में पूसा रेड, नासिक रेड, एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, आर.ओ.–59 एवं पीली प्याज की आर.ओ.–1 उन्नत किस्म हैं।

पुष्पोत्पादन

★**ग्लैडियोलस** के कंदों को 2 ग्राम

बाविस्टीन एक लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 10–15 मिनट तक डुबोकर उपचारित करने के बाद 20–30 x 20 सैमी. पर 8–10 सेमी. की गहराई पर रोपाई करें। रोपाई से पूर्व क्यारियों में प्रति वर्ग मीटर 5 ग्राम कार्बोफ्यूरान अवश्य मिलायें। एक हैक्टर में रोपाई के लिए लगभग 1.5–2 लाख कन्दों की आवश्यकता होती है।

★**गुलाब** के पौधों की कटाई–छँटाई करें।

मसाले

★**सौंफ** की उन्नत किस्में आर.एफ. 101, आर.एफ. 125 हैं इसकी बीज दर 8–10 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें। बुवाई पूर्व प्रति किलो बीज को कार्बेन्डेजिम 50 डब्ल्यू.पी. दवा 2 ग्राम की दर से उपचारित कर बोयें।

★**धनियाँ** की उन्नत किस्में आर.सी.आर. – 41, आर.सी.आर.– 436, यू.डी.– 20 हैं। जिसकी बीज दर 15–20 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें। प्रति किलो बीज को 2.5 ग्राम बाविस्टिन या 2.5–3 ग्राम थाइरम से उपचारित कर बुवाई करें।

चारा फसलें

★**बरसीम** की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में प्रति हैक्टर 25–30 किग्रा. बीज के साथ 1–2 किग्रा. चारे वाली राई को मिलाकर करें। बुवाई से पूर्व अंतिम हैरो चलाते समय प्रति हैक्टर 20–30 किग्रा. नत्रजन एवं 80 किग्रा. फॉस्फेट का उपयोग करें। सदैव कासनी रहित एवं बरसीम कल्चर से उपचारित बीज का ही उपयोग करें।

★**बरसीम** की उन्नत किस्में वरदान, मस्कावी, पूसा जॉइन्ट, बी.एल.– 10, टी– 780, टी– 724, टी– 560, एस. 99–1 आदि हैं।

★**जई** की उन्नत किस्में केन्ट, ओ.एस. –6, यू.पी.ओ.–94 व ओ.एल.–9 हैं, इसकी बीज दर 100 किलो प्रति हैक्टर रखें।

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

★पशुओं को बाह्य परजीवी से बचाव के लिए पशु चिकित्सक की सलाह से पशुशाला में दवाई का छिड़काव नियमित करें।

★पशुओं को 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण व 20 ग्राम नमक रोजाना दें।

मुर्गी पालन

★मुर्गीयों/चूजों को पर्याप्त प्रकाश उपलब्ध करायें।

★संतुलित आहार निर्धारित मात्रा में दें।

★कृमिनाशक दवा पिलाऐं।

★बिछावन को नियमित रूप से पलटते रहें।

★रानीखेत बीमारी से बचाव के लिए टीका लगवायें।

परख

अगस्त, 2016 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये विजेता कृषक का नाम है–

1. श्री भागचन्द जाट
पुत्र श्री रामदेव जाट,
ग्रा.– झबरकिया, पो.– निमेड़ा,
वाया – बिजयनगर,
जिला – अजमेर (305624)

2. श्री टीकाराम देशवाल
पुत्र श्री लक्ष्मणसिंह,
ग्रा.– शिशवाड़ा, पो.– ढण्ढ,
तह.– मंडुआ,
जिला – दौसा (322240)

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 सरसों में सफेद रोली नियंत्रण के लिए बीजोपचार के लिए एक रसायन का नाम बतायें?

प्र.2 जौ की एक बहुउद्धेशीय किस्म का नाम बतायें?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब। हमारा पता है:–

उप निदेशक, कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118,
कृषि निदेशालय,पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

जौ : विपरीत परिस्थितियों में अधिकतम पैदावार प्राप्त करें

राजस्थान में जौ प्रायः सभी जिलों में बोया जाता है। विपरीत परिस्थितियों जैसे पिछेती बुवाई एवं बारानी स्थिति, कम उर्वरा, क्षारीय और लवणीय भूमि में भी जौ उगाया जा सकता है। जौ कि नई किस्मों के विकास के बाद इसकी प्रति हैक्टर उपज में काफी अधिक वृद्धि हुई है।

उन्नत किस्में:– आर.डी. 2552 व आर. डी. 2794 यह किस्में सामान्य बुवाई वाले सिंचित क्षेत्रों एवं क्षारीय व लवणीय भूमि के लिए उपयुक्त है। आर.डी. 2660 असिंचित क्षेत्रों में सामान्य बुवाई के लिये उपयुक्त है तथा पीली व भूरी रोली रोधक किस्म है। आर.डी. 2849 माल्ट बनाने के लिए उपयुक्त है। आर.डी. 2052 व आर. डी. 2035 मोल्या रोग रोधी किस्में है। हरे चारे के लिये आर.डी. 2715 व ज्योति किस्मों की बुवाई करें।

❁ खेत की अच्छी तैयारी करने के पश्चात् दीमक व भूमि में रहने वाले अन्य कीड़ों की रोकथाम के लिए मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से बीज बोने से पूर्व अन्तिम जुताई के समय भूमि में अच्छी तरह मिला दें।

❁ जौ की बुवाई 1 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक की जा सकती है। किन्तु उपयुक्त समय नवम्बर माह रहता है। बीज की मात्रा 100 से 125 किलोग्राम प्रति हैक्टर उपयोग करें। बुवाई 23–25 सेमी की दूरी पर कतारों में करें। चारे की फसल के लिए बीज दर 125–130 किलो प्रयोग करें।

❁ बीज को बोने से पहले 2 से 3 ग्राम मैन्कोजेब या 3 ग्राम थाईरम प्रति किलोग्रम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए जहाँ अनावृत कण्डवा का प्रकोप हो वहाँ 2 ग्राम वीटावेक्स या वीटावेक्स + थाइरम (1 ग्राम+1 ग्राम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

❁ दीमक की रोकथाम के लिए फिप्रोनिल 5 एस.सी. 6 मि.ली. या क्लोथिएनिडीन 50 डब्ल्यू.डी.जी 1.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके ही बुवाई करें।

❁ 10 टन गोबर का सड़ा हुआ खाद प्रति हैक्टर की दर से बुवाई से 4 से 6 सप्ताह पहले डालें। इसके अतिरिक्त 60 किलो नत्रजन व 20 किलो फॉस्फोरस (45 किग्रा. डी.ए.पी. + 50 किग्रा. यूरिया अथवा 125 किग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट + 65 किग्रा. यूरिया) प्रति हैक्टर काम में लें तथा नत्रजन की आधी एवं फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई से पूर्व ऊर कर डालें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय खड़ी फसल में छिटक कर देनी चाहिए।

❁ असिंचित क्षेत्रों में सभी उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही दें।

❁ प्रथम सिंचाई बुवाई के 30–35 दिन बाद करें। द्वितीय सिंचाई 65–70 दिन बाद करें। तृतीय सिंचाई बुवाई के 70–80 दिन पर एवं चौथी सिंचाई 90–96 दिन पर करें।

❁ बुवाई के 30–35 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल दें।

❁ खड़ी फसल में दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर दवा प्रति हैक्टर सिंचाई के साथ दें।

❁ पीली रोली रोग के लक्षण दिखाई देते ही टेबुकोनाजोल 25.9 प्रतिशत ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का 15 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करें।

❁ मोल्या रोग रोधी किस्म आर.डी. 2052 एवं आर.डी. 2035 काम में लें, फसल चक्र में चना, सरसों, प्याज, सूरजमुखी, मैथी, आलू या गाजर की फसल बोयें। जिन खेतों में रोग का अधिक प्रकोप हो वहाँ फसल की बुवाई से पहले 30 किलोग्राम कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण प्रति हैक्टर की दर से भूमि में ऊर कर बुवाई करें।

❁ दाना पकने पर कटाई करें, उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर सामान्यतः 40–45 क्विंटल/ हैक्टर उपज प्राप्त की जा सकती है।

कृषि विभागीय समन्वय समिति का शपथ ग्रहण कार्यक्रम

15 सितम्बर, 2016 को श्रीमान एस.डी. शर्मा अध्यक्ष, राजस्थान राज्य प्रन्यास मंडल (राज्य मंत्री का दर्जा) की अध्यक्षता में कृषि विभागीय समन्वय समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं गठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण कार्यक्रम पतं कृषि भवन में आयोजित किया गया। जिसमें नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गिर्राज प्रसाद शर्मा, उपाध्यक्ष श्री रामपाल वर्मा एवं अन्य पदाधिकिारियों को शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम में विभागीय अधिकारी उपस्थित रहें।

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 3-4 नवम्बर 2016 जयपुर

खेती की उन्नत तकनीक अपनाएं : भरपूर फसल व मुनाफा पाएं

फसल	किस्म	पकाव अवधि (दिनों में)	उपज (क्विं. प्रति है.)	बीज दर (किलो प्रति है.)	बुवाई पूर्व उर्वरक (किलो/है.) ('अ' या 'ब' में से किसी एक का उपयोग करें)		खडी फसल में यूरिया (किलो प्रति है.)	कतारों के बीच दूरी (सेमी.)	विशेष विवरण
					'अ' डी.ए.पी. +यूरिया)	'ब' एस.एस.पी. +यूरिया)			
गेहूँ	राज मोल्या रोधक–1	120–125	40–45	100	80+70	220+100	100	20–22	सामान्य बुवाई, मोल्या रोग रोधक किस्म।
	राज.–4037	120–130	55–60					20–22	सामान्य बुवाई, गर्म जलवायु सहनशील।
	पी.बी.डब्ल्यू–550	128–135	45–58					22–23	सामान्य बुवाई।
	राज.–4083	115–118	35–40	125				20–22	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	राज.–4120	117–124	48–58	100				20–22	सामान्य बुवाई, यूजी 99 रोली रोधक।
	राज.–4079	115–120	47–50					30–32	गर्म तापक्रम सहनशीलता, रोली रोधक।
	राज.–4238	115–120	40–48	125				22–23	रोली, करनाल बन्ट रोधी, पछेती बुवाई।
	के.आर.एल.–210	130–140	40–50	100				20–22	क्षारीय व लवण सहनशील, पीली व भूरी रोली तथा अनावृत कण्डवा रोधी किस्म।
	एच.आई.– 8713	130–135	55–58						काठिया गेहूँ रोली रोधक किस्म।
जौ	आर.डी.–2552	125–130	50–60	100	45+50	125+65	65	23–25	सिंचित,सामान्य बुवाई, क्षारीय, लवणीय भूमि हेतु उपयुक्त।
	आर.डी.–2660	115–120	24–25						असिंचित, सामान्य बुवाई, पीली व भूरी रोली रोधक।
	आर.डी.–2715	120–125	26–28						सिंचित, हरा चारा (50–55 दिन)।
	आर.डी.–2794	120–125	40–45						लवणीय व क्षारीय क्षेत्रों में सामान्य बुवाई वाले सिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त।
	ज्योति	110–115	35–38						सामान्य बुवाई, सिंचित, हरा चारा (45–55 दिन)।
	आर.डी.–2849	120–125	50–55						माल्ट हेतु उपयुक्त, सिंचित क्षेत्र।
चना	जी.एन.जी.–1581 (गणगौर)	130–135	22–24	70–80	80+10	250+45	–	30–32	झुलसा, जड़गलन रोधी, असिंचित।
	आर.एस.जी.–888 (अनुभव)	130–135	20–25						उखटा, जड़गलन, सूखा सहनशील।
	आर.एस.जी.–991 (अपर्णा)	135–140	20–22						हरे चने की किस्म, जड़गलन, उखटा रोग प्रतिरोधी।
	सी.एस.जे.के–6(अंजलि)	130–135	18–20						काबुली चना, उखटा, जड़गलन रोधी।
	प्रताप राज चना	95–100	14–16						बारानी क्षेत्र, फली छेदक एवं उखटा के प्रति मध्यम प्रतिरोधी।
सरसों	लक्ष्मी (आर.एच.–8812)	140–150	20–22	4–5	70+40	190+65	65	30–35	मोटे दानें, सिंचित क्षेत्र।
	बायो 902 (पूसा जय किसान)	130–140	18–20						तुलासिता, सफेद रोली व मुरझान रोगरोधी।
	अरावली (आर.एन.–393)	135–140	22–25						सिंचित, सफेद रोली के प्रति मध्यम रोधी।
	आर.एच.–9304 (वसुन्धरा)	130–135	20–21						सफेद रोली रोधक।
	आर.जी.एन.–73	125–130	22–25						सफेद रोली, पत्तीधब्बा व तना गलन रोग एवं पाला रोधी।
	स्वर्ण ज्योति (आर.ए.–9802	130–135	13–15						देरी से बुवाई एवं असिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त।
मेथी	आर.एम.टी.–143	140–150	15–20	20–25	90+10	250+45	–	30	छाछ्या रोगरोधी व भारी मिट्टी क्षेत्रों हेतु उपयुक्त।
	आर.एम.टी.–305	120–130	18–20						छाछ्या रोगरोधी।
जीरा	आर.जेड.–209	120–125	10–12	12–15	45+15	125+35	35	22–25	छाछ्या रोगरोधी किस्म।
	आर.जेड.–223	120–130	10–12						उखटा व झुलसा रोधी।
	जी.सी.–4	120–130	6–7						उखटा, छाछ्या व झुलसा रोधी।
धनियाँ	आर.सी.आर.–436	110–120	15–16	15–20	65+40	190+65	65	30	छाछ्या व लोंगिया रोग के प्रति मध्यम रोधी।
	आर.सी.आर.–684	120–125	18–20						उखटा व छाछ्या रोधी।
	आर.सी.आर.–480	115–118	18–20						उखटा व छाछ्या रोधी।
राजमा	आर.एस.जे.–178 (अंकुर)	115–120	15–20	120–140	80+70	220+100	100	40	स्वर्णपीत शिरा, तना गलन, जड़गलन रोगों के प्रतिरोधी।
	एच.यू.आर.–136	105–107	14–16						
अलसी	जवाहर–23	120–125	10–14	15–18	32+0	100+66	–	30	रोली, उखटा एवं पौधे गिरने के प्रति अवरोधी।
	आर.एल.102–71 (त्रिवेणी)	120–125	13–15						लवण सहनशील, उखटा एवं छाछ्या रोगरोधी।
	प्रताप अलसी	128–135	20–22						झुलसा, उखटा, छाछ्या रोगरोधी किस्म।
सौंफ	आर.एफ.–101	185–190	20–25	8–10 (सीधी बुवाई) 3–4 (रोपण)	65+40	190+65	–	40–45	रोग प्रतिरोधकता, अधिक वाष्पशील तेल प्रतिशत।
	आर.एफ.–125	190–198	25–30						अधिक रोग प्रतिरोधकता।
	आर.एफ.–143	140–150	18–20						अधिक वाष्पशील तेल प्रतिशत।
ईसबगोल	जी.आई.–2	118–125	14–15	4–5	30+0	100+30	30	30	भूसी की मात्रा अधिक
	आर.आई.–89	110–115	12–16						भूसी उच्च गुणवत्ता युक्त
	आर.आई.–2	110–120	12–16						तुलासिता रोगरोधी किस्म

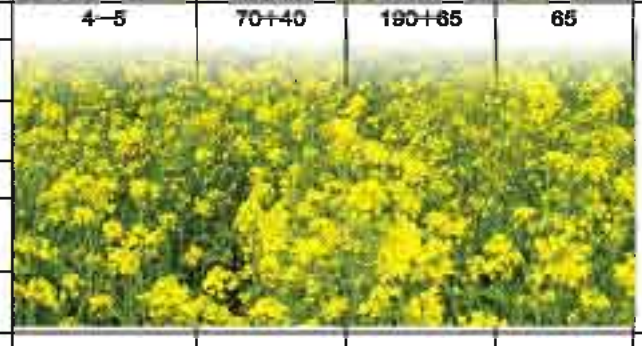

अच्छी उपज के लिये:-

- बीज जनित रोगों से बचाव के लिये 4–8 ग्राम ट्राइकोडर्मा या 3 ग्राम थाइरम या 2 ग्राम कार्बेण्डेजिम या 2 ग्राम मैन्कोजेब दवा प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। बीज उपचार हेतु प्रत्येक ग्राम पंचायत में उपलब्ध बीज उपचार ड्रम काम में लेवें।
- अनाज वाली फसलों में एजेटोबैक्टर, दलहनी फसलों में राइजोबियम व सभी फसलों में पी.एस.बी. कल्चर के 3 पैकेट कल्चर प्रति हैक्टर की दर से बीज उपचार करें। इसके बाद जैव फफूंदनाशी ट्राइकोडर्मा से उपचार करें।
- मिट्टी की जाँच करवा कर उर्वरक देवें। असिंचित फसल में उर्वरक की ऊपर दी गई मात्रा की आधी मात्रा काम में लेवें।
- तिलहनी व दलहनी फसलों में अन्तिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर डालें।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"
घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कमरा नं.–250, कृषि निदेशालय, पंत कृषि भवन, जयपुर (302005) के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड़ नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. JaipurCity/409/2015-17
आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक, कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

किसान स्वयं बनायें नीम से कीटनाशक

नीम जैविक खेती का महत्वपूर्ण घटक है। यह प्रकृति का अनमोल उपहार है। नीम के वृक्ष का हर भाग औषधीय उपयोगिता रखता है। नीम से तैयार किये गए उत्पादों की कीट नियंत्रण शैली अनोखी है, जिसके कारण नीम से तैयार दवा विश्व की सबसे अच्छी कीट नियंत्रण दवा मानी जा रही है। किसान घर पर भी नीम से कीटनाशक बना सकते हैं।

निम्बोली एकत्र करना:– निम्बोलियाँ पककर पीली होने लगें तो इन्हें वृक्ष पर ही तोड़ लेना सबसे उत्तम रहता है, इस स्थिति में अजाडिरेक्टिन की मात्रा सर्वाधिक होती है। चूंकि सभी निम्बोलियाँ एक साथ न पककर धीरे–धीरे पकती रहती है। अतः आर्थिक दृष्टि से जमीन पर टूटकर पड़ी हुई निम्बोलियों को बीनना उत्तम रहता है। झाड़ू लगाकर निम्बोली एकत्र करना उचित नहीं है क्योंकि इससे बीज में हानिकारक कवकों व जीवाणुओं के संक्रमण का खतरा रहता है जो बाद में चलकर बीज और इसके तेल को खराब करते हैं। अतः चार से सात दिन में एक बार निम्बोलियों की बिनाई कर लेनी चाहिए।

छिलका या गूदा छुड़ाना:– पूरे फल को सुखाकर संग्रह करना अधिक लाभप्रद है किन्तु वर्षा में गूदे युक्त फल को सड़न से बचाकर सूखा पाना लगभग असम्भव है अतः निम्बोलियों को पानी में डालकर रगड़कर धो देते हैं ताकि सभी गूदा व छिलका छूटकर बीज से अलग हो जाये।

बीज सूखाना:– उपरोक्त तरीके से प्राप्त बीज को अधिक गर्म सतह पर और अधिक धूप में सुखान ठीक नहीं किन्तु नमी को जल्द से जल्द सुखाना भी आवश्यक है। अतः बीज को टाट, बोरा, कपड़ा या चटाई पर बिछाकर हल्की धूप व छाँया में सुखाना चाहिए। पक्की फर्श, प्लास्टिक शीट, लोहे की शीट धूप में अधिक गर्म हो जाती हैं अतः इन पर सुखाने से बचें।

भण्डारण:– अच्छा यह रहता है कि बीज से तेल तीन से छः माह में निकाल लिया जाये, गिरी पुरानी होने पर तेल कम हो जाता है। किन्तु यदि इसके भण्डारण की जरुरत पड़े तो इसे धूप, नमी,गर्मी से बचाकर सूखे, ठण्डे छाँयादार स्थान में कपड़े या जूट के बोरों या थैलों में रखें। प्लास्टिक के बरतनों में रखना ठीक नहीं रहता।

उपयोग के तरीके–

पाउडर बनाकर:– नीम के बीज को खूब महीन पीसकर पाउडर बना लें, इसमें बराबर या दुगुनी मात्रा में कोई निष्क्रिय पदार्थ जैसे लकड़ी का बुरादा, चावल की भूसी या बालू मिट्टी मिला लें। इस पाउडर को फसल पर इस ढ़ग से भुरकें कि यह पत्ती और तने पर चिपक जाये। फसल पर लगे कीड़े इसे खाकर मर जायेंगे। बीज की भांति नीम की खली का पाउडर बिना कुछ मिलाये ही सीधे फसल पर भुरका जा सकता है। नीम की खली यदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो तो इसे खेत की मिट्टी में बुवाई पूर्व सीधे मिला दें जिससे अनेक प्रकार के मिट्टी में पाये जाने वाले हानिकारक कीड़े मर जायेगें तथा खेत में यूरिया की बचत होगी।

तेल का प्रयोग:– नीम के तेल की 5 मिली प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें। नीम के तेल को साबुन के साथ पानी में घोलें। एक टंकी (15 लीटर) पानी में एक चम्मच साबुन पाउडर व लगभग 75 से 100 मिली तेल फसल पर छिड़कें। इस घोल के कुछ देर पड़ा रहने पर तेल व पानी अलग–अलग हो जाता है, अतः इसे थोड़ी–थोड़ी देर तक खूब हिलाते रहना चाहिए। ध्यान रखें कि नीम का तेल अधिक मात्रा में एक जगह पत्ती आदि पर पड़ने से उसे जला देता है।

पानी में घोलकर:– हालांकि शुद्ध रुप में अजाडिरेक्टिन पानी में कम घुलता है, किन्तु बीज, गिरी या खली में उपस्थित अजाडिरेक्टिन इनमें उपस्थित अन्य रसायनों के कारण पानी में पूरा का पूरा घुल जाता है। वास्तव में नीम आधारित कीटनाशक बीज या गिरी से फैक्ट्रियों में बनाये जाते है, उतने ही कच्चे माल से उतनी ही प्रभावकारी दवा हम घर पर इसे पानी में घोलकर बना सकते हैं। नीम पदार्थ से पूरी की पूरी दवा घोलकर बाहर निकालने के लिये निम्न तरीका अपनायें:–

- बीज, गिरी या खली को खूब महीन करके रातभर पानी में भीगने दें। अगले दिन सुबह इसको खूब मथकर पतले कपड़े से छान लें। छानने से बचे पदार्थ में फिर पानी मिलाकर मथकर पुनः छानें। ऐसा करने से पदार्थ में स्थित पूरा का पूरा कीटनाशक बाहर निकल आता हैं।

पत्ती को पीसकर:– यदि नीम का तेल, बीज, गिरी या खली न उपलब्ध हो तो नीम की 3 से 4 किलो ताजी पत्तियों को पीसकर 10 लीटर पानी में घोलकर छान लें। यह घोल फसल पर छिड़कने से फसल की अनेक प्रकार से कीड़ों से रक्षा करता है।

बहुउपयोगी अलसी की खेती

अलसी की खेती प्रमुख रुप से कोटा, भीलवाड़ा, टोंक व अजमेर जिलों के कुछ भागों में होती है। अलसी की खेती सामान्यतः बारानी क्षेत्रों में की जाती है। इसके लिये काली चिकनी मिट्टी उपयुक्त रहती है।

अलसी के उपयोग:–

★ अलसी में 37–42 प्रतिशत तक तेल पाया जाता है। जिसका उपयोग किसानों द्वारा घरेलू कार्यो में काम आता है।

★ अलसी का तेल विभिन्न प्रकार के उद्योगों में पेंट, वार्निश, चर्म उद्योग, पैडस्याही, छपाई की स्याही इत्यादि बनाने के उपयोग में आता है।

★ अलसी की खली दुधारु पशुओं, भेंड़ एवं घोड़े के लिये उपयोगी आहार है तथा भूमि कि उर्वरा शक्ति बढ़ाने में अतिउपयोगी है।

★ अलसी के तने से अच्छी गुणवत्ता के मजबूत, टिकाऊ एवं चमकीले रेशे मिलते है। जिन्हें सिल्क, सूती एवं ऊनी रेशों में आसानी से मिश्रित कर अच्छे कपड़े बनाये जा सकते है।

★ अलसी में 20–24 प्रतिशत प्रोटीन व 15–29 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट एवं विटामिन–बी पाया जाता है। जिसका उपयोग मानव स्वास्थ्य के लिये फायदेमंद है।

★ अलसी में ओमेगा–3 तेल पाया जाता है। जिसका उपयोग ह्रदय रोगियों के लिये फायदेमंद है।

उन्नत किस्में:– आर.एल. 102–71 (त्रिवेणी), चम्बल, टी– 397, जवाहर–23 एवं प्रताप अलसी– 1

भूमि की तैयारी एवं भूमि उपचार:– अलसी के लिये काली चिकनी मिट्टी उपयुक्त रहती है, भूमि क्षारीय या अम्लीय नहीं होनी चाहिये। अलसी की खेती सामान्यतः बारानी क्षेत्रों में ही होती है। कुछ क्षेत्रों में अलसी की सिंचित फसल भी ली जाती है। दीमक तथा जमीन के अन्य कीड़ों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व जुताई के समय क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से

खेत में भुरकाव कर जुताई करें ताकि दवा मिट्टी में भली प्रकार से मिल जाये।

बुवाई का समय एवं बीज की मात्रा:– बारानी अलसी की बुवाई 10 अक्टूबर से पूर्व ही कर देनी चाहिये। विलम्ब से बुवाई करने पर पैदावार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। एक हैक्टर के लिये 15 से 18 किलो बीज पर्याप्त होता है। बीज 30–30 सेन्टीमीटर के अन्तराल पर कतारों में 5–6 सेन्टीमीटर गहरा बोयें। बीज की गहराई नमी के अनुसार रखें।

खाद व उर्वरक:– अलसी के लिये 30 किलो नत्रजन एवं 15 किलो फॉस्फोरस प्रति हैक्टर डालना चाहिये। उर्वरक बुवाई के समय ऊर कर दीजिये।

सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई:– दो सिंचाई उपलब्ध हो तो पहली सिंचाई 40–45 दिन में व दूसरी 60–75 दिन में करें। यदि एक ही सिंचाई उपलब्ध हो तो 50–60 दिन में करें। खेत में खरपतवार दिखाई देने पर बुवाई के 20–25 दिन बाद निराई–गुड़ाई करें।

पौध संरक्षण:–

उखटा:– यह बीमारी पौधों की बढ़वार की सभी अवस्थाओं में होती है। पौध संक्रामी, बीज पत्र भीतर की ओर लपेट लेते है और पौधा मरने लगता है। तरुण पौधों में नीचे की पत्तियाँ सिकुड़कर मुरझा जाती है और प्रौढ़ पौधों की लटकी, सिकुड़ी हुई पत्तियों के गिरने पर खेत में तने ही खड़े हुए रह जाते है। रेतीली भूमि में इस रोग की व्यापकता अधिक होती है। 3 ग्राम थाइरम से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बोने से इसका आंशिक संक्रमण रोका जा सकता है। रोगरोधी किस्में बोयें।

छाछ्या:– रोग की रोकथाम के लिये घुलनशील गंधक के 0.3 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। रोगरोधी किस्में बोयें।

रोली (रतुआ):– चमकते नारंगी रंग के छाले जैसे पश्चूल्स पत्तियों और तने पर बन जाते हैं। इनमें नारंगी रंग के चूर्ण जैसे बीजाणु भरे रहते है, जो आसानी से नये संक्रमण स्थापित करते है। इसकी रोकथाम के लिए 1.5 प्रतिशत केलेक्सिन का छिड़काव करें।

- रोगरोधी किरण किस्म बोयें।

अत्यधिक उपज लेने के उपाय:–

★ संस्तुत प्रतिरोधी प्रजातियाँ उगायें।

★ बुवाई के समय खेत में नमी की उचित मात्रा सुनिश्चित कर लेनी चाहिये।

★ बुवाई उचित समय पर करें।

★ सिफारिश की गयी उर्वरकों की मात्रा का प्रयोग उचित समय पर करें।

★ फसल रक्षक सिंचाई करें।

नीम लेपित यूरिया से बढ़ायें पैदावार

नीम लेपित यूरिया का उपयोग विभिन्न फसलों में पौधों को नत्रजन की 5 से 10 प्रतिशत उपलब्धता बढ़ाने में सहायक होता है।

साधारण यूरिया में नत्रजन के होने वाले नुकसान को रोकने के लिए नीम लेपित यूरिया को विशेषकर मैदानी क्षेत्र में बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त साधारण यूरिया की तुलना में 5–10 प्रतिशत कम मात्रा में नीम लेपित यूरिया के उपयोग किये जाने से आर्थिक लाभ भी अधिक होता है।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक निदेशक कृषि, कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक व मुद्रक – अम्बरीष कुमार
सम्पादक – खेमराज शर्मा
सह सम्पादक – सुनीता घोसल्या
परामर्श – जे.पी. यादव
– राजेन्द्र सिंह मनोहर
डिजाइनर – रैजनल मैसी